**Dr. Kumari Priyanka**

**Department of history**

**H.D jain college, ara**

Notes for B.A part 3

## Topic :-तुगलक वंश के पतन के कारण

तुगलक वंश (1320-1414 ई.) का पतन कई राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक और सैन्य कमजोरियों के कारण हुआ। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

### 1. प्रशासनिक असफलताएँ

- **अति-विस्तार नीति** - मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिण भारत तक साम्राज्य का विस्तार किया, लेकिन इसे प्रभावी रूप से नियंत्रित नहीं कर पाया।
- **राजधानी परिवर्तन** - दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरण (1327 ई.) असफल रहा, जिससे जनता और प्रशासनिक तंत्र को भारी कष्ट हुआ।
- **कर सुधारों की विफलता** - दोआब क्षेत्र में भारी कर वृद्धि (1326-27 ई.) के कारण किसानों में असंतोष बढ़ा और विद्रोह हुए।

### 2. आर्थिक संकट

- **मूर्तियों के सिक्के** - मुहम्मद बिन तुगलक ने तांबे के सिक्कों को चांदी के सिक्कों के समान मूल्य देकर चलाने का प्रयास किया, लेकिन जालसाजी के कारण अर्थव्यवस्था चरमरा गई।
- **व्यापार और कृषि में गिरावट** - करों के बोझ और प्रशासनिक अस्थिरता के कारण व्यापारिक गतिविधियाँ प्रभावित हुईं और कृषि उत्पादन में गिरावट आई।

### 3. विद्रोहों की वृद्धि

- **दक्षिणी प्रांतों की स्वतंत्रता** - विजयनगर (1336) और बहमनी (1347) साम्राज्यों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।
- **मंगलौर, बिहार और बंगाल में विद्रोह** - विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय विद्रोह हुए, जिन्हें दबाने में तुगलक शासक असफल रहे।

- **अमीरों और सरदारों का असंतोष** - प्रशासनिक विफलताओं और कठोर नीतियों के कारण कुलीन वर्ग (अमीरों) ने विद्रोह कर दिया।

## 4. कमजोर उत्तराधिकारी और आंतरिक संघर्ष

- **फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)** ने प्रशासनिक सुधार किए, लेकिन सैन्य शक्ति कमजोर रही।
- **उत्तराधिकार संघर्ष** - फिरोज शाह की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारियों में सत्ता के लिए संघर्ष हुआ, जिससे साम्राज्य कमजोर हुआ।
- **गुलामों और अमीरों का प्रभाव** - अमीरों और सरदारों ने शासन में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया, जिससे केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई।

## 5. बाहरी आक्रमण

- **तैमूर का आक्रमण (1398 ई.)** - तैमूर ने दिल्ली पर आक्रमण किया, भारी लूटपाट की और नगर को तहस-नहस कर दिया। इस आक्रमण से दिल्ली सल्तनत की शक्ति को गहरा आघात लगा।

## 6. दिल्ली की अस्थिरता

- तैमूर के आक्रमण के बाद दिल्ली में अराजकता फैल गई।
- 1414 में सैयद वंश के संस्थापक खिज्र खां ने सत्ता हासिल की, जिससे तुगलक वंश का अंत हो गया।

## निष्कर्ष

तुगलक वंश का पतन प्रशासनिक असफलताओं, आर्थिक संकट, विद्रोहों, कमजोर उत्तराधिकारियों और बाहरी आक्रमणों के कारण हुआ। विशेष रूप से तैमूर के आक्रमण ने इस पतन की प्रक्रिया को तेज कर दिया और अंततः सैयद वंश ने तुगलक वंश का स्थान ले लिया।